प्रमोद कुमार

द्वारा- प्रो. राजकुमार,
न्यू एफ- 14, हैदराबाद कॉलोनी,
बीएचयू , वाराणसी - 2215
मो.9451895477

जादू

दरवाज़े के खुलते ही उनमें हरकत हुई थी।

वे कईं थीं। कुछ ऊँची छत तक छूती आलमारियों पर सवार थीं। कुछ दीवारों पर बने हुए रैक पर। कुछ कुर्सियों पर, कुछ मेज पर पड़ी थीं। कुछ मेजों और कुर्सियों के नीचे। कुछ नंगे फर्श पर।

कुछ ताज़गी के सुवास से भरी थीं। सफेद। कुछ थोड़ा सफेद, थोड़ा पीलापन लिए। कुछ फटी हुई, मुड़ी-तुड़ी, छिद्रित। कुछ बिल्कुल पीली पड़ गईं थीं। कुछ ने अपने भीतर धूल की तहें समेट ली थीं। कुछ ने दीमकों को आश्रय दिया था, कुछ ने मकड़ी के जाले को। कुछ जीर्ण- शीर्ण हो गईं थीं। कुछ इतनी कि हाथ लगाते ही टूट कर नीचे गिरने लगे।

वे दिखने में चिड़ियों के समान बहुत छोटी-सी थीं, इतनी कि अगर ब्रह्मांड का नक्शा बनाया जाये तो उसमें उनका अस्तित्व विलीन हो जाए; लेकिन आश्चर्य यह था कि वे अपने भीतर पूरे ब्रह्मांड को समेटे हुए थीं।

वे सभी उत्सुक थीं, और दरवाज़ा खोलकर अन्दर कदम रखने वाले जादूगर को बहुत अरमानों से देख रही थीं। जादूगर बहुत भूखा और बेचैन था, उसके चेहरे पर असंतुष्टि के भाव थे, जाने कौन-सी बातें उसे रह रहकर परेशान कर रहीं थीं। उसका सिर नीचे झुका हुआ था और उसमें आत्मविश्वास की कमी साफ-साफ झलक रही थी।

भूखे- बेचैन-असंतुष्ट जादूगर ने बड़ी उम्मीद के साथ एक की ओर अपने हाथ बढ़ाए।

जादूगर ने जिसकी ओर अपने हाथ बढ़ाए थे, उसकी खुशी का कोई पारावार ही न रहा ; वह बहुत खुश हो गई और चिड़िया की तरह उसने अपने थोड़े सफेद, थोड़े पीले पंख फड़फड़ाने शुरू कर दिए।

जादूगर के हाथों का सुखद स्पर्श पाते ही उस चिड़िया ने अपने पंखों को फड़फड़ाना बन्द कर दिया ; और शान्तचित्त होकर जादूगर के अगले कदम का इंतज़ार करने लगी। जादूगर ने उसके पहले पंख पर अपनी नज़रें डालीं और वहाँ उगे मोतियों को निहारने लगा।

अपने पहले पंख पर जादूगर की नज़रें पड़ते ही उसने अपनी आँखें बन्द कर लीं और मन ही मन खुदा से प्रार्थना करने लगीं।

कुछ देर तक पहले पंख पर उगे मोतियों को निहारने के बाद जादूगर ने उसे आलमारी में वहीं रख दिया जहाँ से उसे उठाया था।

जादूगर द्वारा फिर से आलमारी में रख दिए जाने पर वह बहुत उदास हो गई। खुदा के द्वारा उसकी प्रार्थना ठुकरा दी गई थी, मन में यह ख़याल आते ही उसे और भी बुरा लगने लगा; वह आत्मग्लानि से भर गई। उसका हृदय शोक से भर गया; शोक में वह अपना संतुलन ठीक से रख नहीं पा रही थी। अचानक उसके कदम लड़खड़ाए, और वह तेजी से आलमारी से नीचे फर्श की ओर गिरने लगी।

नीचे गिरने पर उसका क्या अंजाम होगा, इसकी कल्पना कर वह सिहर गई। उसने डर से अपने सारे पंख जोर - जोर से फड़फड़ाने शुरू कर दिए। जोर से आवाज़ करते हुए वह फर्श पर गिर पड़ी; गिरते समय वह फर्श पर कुछ दूर तक घिसटती चली गई। उसके कुछ पंख टूट गए थे; अपने टूटे पंखों को देखकर वह दुख से भर गई। उसने एक नज़र जादूगर पर डाली और बहुत ही हसरत से उसे देखने लगी।

लेकिन उसे मायूस होना पड़ा, जादूगर ने नज़रें उसकी ओर से फेर लीं थीं, और दूसरी आलमारी की ओर अपने कदम बढ़ा दिए थे।

जादूगर दूसरी आलमारी की ओर बढ़ा। जादूगर को अपनी ओर बढ़ते देख उस आलमारी पर बसेरा करने वालीं सारी चिड़िया अत्यन्त प्रसन्न हो गईं। वे बहुत ही आशा से जादूगर को देखने लगीं। जादूगर ने एक सफेद- पीले पंखों वाली चिड़िया की ओर अपने हाथ बढ़ा दिए, और उसे अपनी हथेलियों में भर लिया। जादूगर के द्वारा स्पर्श किए जाने के कारण सफेद- पीले पंखों वाली चिड़िया गर्व से भर गई, और थोड़ा अहं से भी।